खंड अफ्रीका पर, 1822 में इसका संशोधित संस्करण, 1823 में एशिया पर दूसरा खंड और 1832 में शेष विश्व पर तीसरा खण्ड प्रकाशित हुआ। जीवन के अन्त समय तक उन्होंने अर्डकुण्डे के कुल 19 खण्ड लिखे, जिसमें सिर्फ एशिया के ही 14 खण्ड थे। यूरोप पर उनका ग्रंथ अधूरा रह गया। अर्डकुण्डे का पूरा नाम बहुत लंबा है, जो अंग्रेजी में इस प्रकार है–

Earth Science is related to nature and to the history of man : A general comparative geography, as a secure foundation for study and teaching in the physical and historical sciences.

पहले दो खंडों में रिटर ने हम्बोल्ड्ट द्वारा बताई धरातलीय विधि को अपनाया, जिससे भूगोल का विकास हुआ। इस ग्रंथ में उन्होंने यूरोप को छोड़कर प्रत्येक महाद्वीप को प्राथमिक अध्ययन के लिए ध रातलीय इकाइयों, जैसे - पर्वत, पठार, निम्न भूमि एवं मध्यवर्ती क्षेत्र (जिनमें विभिन्न स्तर पर जटिल समायोजन है।) में विभाजित कर ऐसी प्रत्येक इकाई का वर्णन, भूमि का स्वरूप, जल-प्रवाह, जलवायु, मुख्य उपज, जनसंख्या एवं ऐतिहासिक घटनाओं को ध्यान में रखकर किया। उनके अनुसार इन बड़ी इकाइयों को स्थानीय स्वरूपों के आधार पर उप-विभाजित कर उनके परस्पर संबंधों को भी वर्णित करना चाहिए। अंत में इन सबका निष्कर्ष उस महाद्वीप की एकरूपता के अनुसार दिया जाना चाहिए।

इन रचनाओं में दो प्रकार का चिंतन स्पष्ट है। पहला, भौगोलिक अध्ययन में भूतल पर पाई जानेवाली विभिन्नताओं को समझकर उनकी व्याख्या का प्रयास किया गया। दूसरे, रिटर ने सभी जगह प्रादेशिक एवं अन्य अध्ययनों में मानव को केन्द्र-बिन्दु माना। ऐसा करने में कहीं-कहीं अतिरेकता भी आ गई। उन्होंने भूगोल में क्षेत्र-विवरण विज्ञान (Chorological) एवं पारिस्थितिकी (Ecological) विज्ञान को बहुत महत्व दिया, जो आज भी बना हुआ है।

5.3.2 रिटर की संकल्पना एवं विधितंत्र [Concept and Methodology of Ritter]

हम्बोल्ड्ट के विचारों से प्रभावित होते हुए भी रिटर के अपने स्वतंत्र विचार रहे। दोनों की विचारधारा में समानता होते हुए भी बड़ा अंतर है। रिटर की संकल्पना या विचारधारा के मुख्य तथ्य इस प्रकार है :-

1. वातावरण-निश्चयवाद (Determinism) के अनुभवी रिटर के अनुसार भौगोलिक विविधता (Geographical Diversity) के द्वारा ही ऐतिहासिक विविधता उत्पन्न होती है।

2. लगातार ग्रंथों की रचना, शोध-कार्यों आदि के कारण रिटर के विचारों को लगातार विकास होता रहा तथा इनके अध्ययन से ही उनकी विचारधारा का सही ज्ञान हो सकता है।

3. गट्टेरेर तथा होम्मेयर के शुद्ध भूगोल (Reine Geography) की विचारधारा को नकार कर इन्होंने ज्यूने के विचारों का समर्थन किया जिसके अनुसार किसी क्षेत्र की भू-रचना, जलवायु, पौधों, जंतुओं और मनुष्यों में अंतर्सम्बंध होता है। उनके अधिक विस्तृत एवं तर्कसंगत विचारों के अनुसार किसी क्षेत्र की स्थिति (position), भौतिक लक्षणों, जलवायु और प्राकृतिक साधनों के सहसंबंध (Cc-relation) द्वारा ही उस क्षेत्र के भौगोलिक व्यक्तित्व को समझाया जा सकता है। उनके मत के अनुसार, पृथ्वी का पूर्ण एवं दृश्यस्वरूपीय वर्णन प्रस्तुत करना ही भूगोल का पवित्र उद्देश्य है।'' भूगोल एक आनुभाविक एवं विवरणात्मक विज्ञान है।

4. संपूर्णता का चिंतन (Concept of Whole) — रिटर की ग्रंथमाला 'अर्डकुण्डे' का एक मुख्य प्रयोजन प्रादेशिक व्यक्तित्व (Regional Individuality) तथा पूर्ण (Whole) की संकल्पना को मजबूत करता

रहा। इस संकल्पना के अनुसार भूगोल में पृथ्वी के अलग क्षेत्रों का प्रादेशिक व्यक्तित्व पहचानते हुए उन सभी क्षेत्रों को मिलाकर समस्त पृथ्वी का व्यक्तिगत पूर्ण (Individual whole) के रूप में वर्णन किया जाता है। उनका विश्वास था कि ग्लोब पर प्रकृति की एकता में ही जैविक एवं अजैविक, मानव और अमानवीय, भौतिक एवं अभौतिक सभी तत्त्व निहित हैं, जिसमें से यदि किसी को अलग कर दिया जाए तो संपूर्णता का यह संगठन ही नष्ट हो जाएगा। पृथ्वी की तथ्यात्मक एकता के संबंध में उन्होंने हमेशा हम्बोल्ड्ट का साथ दिया।

5. क्षेत्रीय अध्ययन एवं क्षेत्रीय संबंध (Chorological Studies and its Relationship) — रिटर ने क्षेत्रीय संबंध (relationship in space) के सिद्धांत को संगठित करते हुए माना कि पृथ्वी और उसके निवायिों में सबसे अधिक घनिष्ठ पारस्परिक संबंध (reciprocal relations) होते हैं। दोनों में से किसी एक को भी उसके समस्त संबंधों में, एक-दूसरे के बिना प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। उनकी रुचि क्षेत्रों को चारित्रिक लक्षण प्रदान करनेवाले उनके संपूर्ण तथ्यों के अध्ययन में रही। उनके अनुसार विभिन्न क्षेत्रीय स्वरूपों को कारण एवं प्रभाव के आधार पर तुलनात्मक पद्धति के स्पष्ट करना चाहिए। किंतु अपनी प्रादेशिक व्यवस्था में खुद इसका प्रयोग नहीं करने के कारण आलोचना के शिकार बने।

6. क्रमबद्ध या व्यवस्थित अध्ययन पर चिंतन (Thought or view on Systematic Study) — यद्यपि रिटर ने भूगोल में सिद्धांत: क्रमबद्ध या व्यवस्थित अध्ययन को गौण महत्त्व दिया। फिर भी उन्होंने अपने विभिन्न लेखों एवं ग्रंथों (खासकर अर्डकुण्डे व यूरोप का भूगोल में) में इसकी अप्रत्यक्ष महत्ता स्वीकार की। इससे यह लगता है कि उन्होंने भूगोल को शुद्ध विज्ञान या भौतिक विज्ञान समग्र दिए गए के रूप में वर्णन करने को ही संकीर्ण अर्थों में क्रमबद्ध अध्ययन माना और पृथ्वी के प्रादेशिक विभाजन एवं उसकी व्याख्या के क्रमबद्ध अध्ययन को प्रादेशिक अध्ययन का अंग माना। जबकि भूगोल में बिना क्रमबद्धता या व्यवस्थित वर्णन के कोई भी विधि-तंत्र या विशिष्ट शोधपूर्ण अध्ययन को नहीं समझाया जा सकता है। अत: रिटर द्वारा इसे 'दोहरे अर्थों में प्रयुक्त भ्रमपूर्ण अभिव्यक्ति कह सकते हैं और इसी बिंदु पर रिटर की आलोचना भी की जाती है।

7. भूगोल आनुभाविक विज्ञान के रूप में (Geography as an Empirical Science) — उनके अनुसार भूगोल अन्य विज्ञानों की भाँति केवल सिद्धांतों पर आधारित नहीं; बल्कि अनुभवों एवं प्रेक्षणों पर आधारित एक आनुभाविक विज्ञान है। उनकी अध्ययन प्रणाली सिद्धांतों के अलावा इन पर भी आधारित है। प्रारंभ में क्षेत्र-निरीक्षण, तथ्य संकलन, उनका क्षेत्र में पारस्परिक संबंध स्थापना कर ऐसे संबंधों की व्याख्या करते वक्त अनुभव के आधार पर नियमावली निर्धारित करनी चाहिए। फिर विपरीत तथ्यों की अंत:निर्भरता एवं अंत:संबंध को भी मुक्तिपूर्ण महत्त्व दिया जाना चाहिए। इस चिंतन को हार्टशोर्न ने 'तथ्यों की अन्त: निर्भरता' के नाम से आगे बढ़ाया।

8. मानव केन्द्रित भूगोल (Man Centred Geography) — रिटर के अनुसार भूगोल का उद्देश्य मानव-केंद्रित दृष्टिकोण (anthropo-Centric standpoint) से पृथ्वी तल का अध्ययन करना तथा उसमें मानव और प्रकृति के बीच संबंध स्थापित करना तथा पृथ्वीतल की घटनाओं (Events) के मौलिक कारणों को भी समझाना है। उन्होंने मानव और क्षेत्र के इतिहास व उसके भूमि के संबंधों को समझाते हुए प्रदेशों के अध्ययन में मानव को केंद्रीय स्थान दिया।

9. ईश्वर उद्देश्यवादी विचारधारा (Teleological View) — रिटर के अनुसार मानव की शिक्षण या पोषण भूमि पृथ्वी की रचना ईश्वर ने उद्देश्यपूर्वक की है। वस्तुत: ईश्वर के द्वारा कुछ नियमों के अंतर्गत

प्रत्येक महाद्वीप या क्षेत्र को वह आकृति (form) तथा स्थिति (position) प्रदान की गई है, जो उसके ऊपर निवास करनेवाली मानव जाति (mankind) के विकास में अपनी निश्चित भूमिका अदा कर सके।

10. प्राकृतिक-प्रादेशिक अध्ययन (Study of Physical Region)—

रिटर ने क्रमबद्ध प्रणाली की जगह प्रादेशिक प्रणाली को अपनाते हुए पृथ्वीतल को प्राकृतिक प्रदेशों में बाँटकर उसका वर्णन किया। प्रादेशिक अध्ययन के लिए उन्होंने 'लाण्डेरकुण्डे' (Landerkunde) शब्द प्रयुक्त किया, जिसका अर्थ 'प्राकृतिक प्रदेश' होता है।

11. रिटर ने अपने उद्देश्य की व्याख्या करते हुए बताया कि संपूर्ण क्षेत्र का जैविक दृश्य प्रस्तुत करना, महाद्वीप का प्राकृतिक चित्रण व कृषि लक्षण समझाना एवं तथ्यों का संगठित इकाई के रूप में प्रस्तुत करना ही इस कृति का उद्देश्य रहा है।" इस कार्य के लिए स्थल के प्राकृतिक और कृषि उत्पादनों, प्राकृतिक और मानवीय लक्षणों को अलग-अलग तथा एक सम्बद्धपूर्ण (coherent whole) के रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाए कि मानव और प्रकृति के विषय में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण अनुमान स्वयं प्रत्यक्ष हो जाए, विशेषकर जब उसकी साथ-साथ तुलना की जाए।

12. भूगोल का क्षेत्र (Field of Geography)—भूगोल के क्षेत्र को रिटर ने तीन घटकों में बाँटा–

(i) लक्षणीय (Tapical) – इसका संबंध पृथ्वी के प्राथमिक या स्थिर स्वरूपों से है, जिसमें महाद्वीप स्थिर स्वरूप है।

(ii) स्वरूपीय (Formal)–इसके अंतर्गत सुस्पष्ट गतिशील या परिवर्तनशील (सागर, वायुमंडल, ज्वालामुखी) दिखाई देने वाले लक्षण हैं।

(iii) भौतिक तत्त्व स्वरूप (Material Form)—इसमें जैविक तत्त्वों में पौधे एवं वनस्पति और अजैविक पदार्थ में मुख्यतः खनिज-पदार्थों को सम्मिलित किया।

प्राकृतिक वातावरण के अंग इन तीनों घटकों पर मानवीय क्रिया के प्रभाव का मूल्यांकन भूगोल में किया जाता है।

5.3.3 रिटर के अध्ययन एवं वर्णन की विधियाँ (Methods of Ritter's Study and Explanations]—

रिटर ने अपने अध्ययन एवं भौगोलिक वर्णन में निम्न विधियों को अपनाया -

(i) आनुभाविक विधि (Empirical Method)

(ii) तुलनात्मक विधि (Comparative Method)

(iii) विश्लेषण एवं संश्लेषण विधि (Analysis and Synthesis Method)

(iv) मानचित्रण विधि (Catrographic Method)

5.4 रिटर की आलोचना (Criticism of Ritter)

रिटर के कार्यों में कई विवादास्पद वर्णन एवं तथ्य पाए गए हैं, जिनके कारण कई विद्वानों ने निम्नलिखित बिंदुओं पर उनकी आलोचनाएँ भी की है। ये हैं :-

(i) लगातार कई ग्रंथ लिखने में व्यस्त रहने के कारण उन्होंने अपने पहले के कार्यों एवं विचारों को स्पष्ट एवं संशोधित नहीं किया।

(ii) मानव-पक्ष की ओर उनका खास झुकाव था।

(iii) उन्होंने प्राकृतिक तथ्यों के विकासीय रूप के ऊपर हेतु विद्या एवं ईश्वरीय प्रभाव को अधिक महत्त्व दिया।

(iv) रिटर का इतिहास के प्रति व्यक्त अनुराग भूगोल में भ्रम उत्पन्न करनेवाला माना गया।

(v) वे हम्बोल्ड्ट की भाँति प्रेक्षणवेत्ता नहीं थे तथा उन्होंने हमेशा दूसरों के अनुभवों एवं पुस्तकालयों की मदद की। उन्हें 'आरामकुर्सी पर आसीन भूगोलवेत्ता (Arm chair Geography) माना गया।

(vi) उन्हें द्वैतवादी विचारों का भी पोषक माना गया, किंतु वास्तविकता में स्वयं रिटर ने पृथ्वी की एकता को सर्वोपरि माना।

5.5 निष्कर्ष (Summing-up)

आधुनिक भूगोल के अधिष्ठाता कार्ल रिटर ने पृथ्वी को मानव का निवास मानते हुए मानव एवं उसके कार्यों को प्राकृतिक तत्त्वों की भाँति महत्त्वपूर्ण माना, जो भौगोलिक अध्ययन में एक नवीन देन हुई। इन विचारों के कारण उन्हें भूगोल में द्वैधता का पोषक भी माना गया। उन्होंने अपने पूर्व के विद्वानों के असंगठित कार्यों को ग्लोबीय एकता की भाँति एकरूपता में रखा, जो आज भी मान्य है।

काण्ट से प्रभावित रिटर ने पृथ्वी के लक्षणीय तत्त्वों के विन्यास, मानव विलक्षण जीवों का भूतल पर वितरण आदि की रचना एवं व्यवस्था में धर्म एवं धार्मिक संयोग का भी सहारा लिया। संक्षेप में, उनकी उपलब्धियाँ उनका क्षेत्र, विवेचना, पृथ्वी की एकता, मानव को क्षेत्रीय विवरणों में उपयुक्त स्थान, प्राकृतिक परिवेश, मानवीय तत्त्व विवेचन। क्षेत्रों में रचित प्राकृतिक एवं मानवीय तत्त्वों के परिवेश का अंतर्सम्बन्ध जैसे बिन्दुओं पर बुद्धिमत्तापूर्ण व्याख्या उनकी कुछ कमियों या आलोचनाओं से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण रही। वे एक ऐसे भूगोलवेत्ता, शिक्षक, विवेक एवं मार्ग-निर्देशक रहे, जिनका तात्कालिक प्रभाव हम्बोल्ड्ट से भी अधिक रहा।

5.6 व्यवहृत शब्दावली (Key words used)

वातावरण-निश्चयवाद (determination)—इसके अनुसार भौतिक वातावरण के तत्त्व ही मानव की क्रियाओं, उसके जीवन-निर्वाह के साधनों तथा समाज और संस्कृति के प्रतिरूपों को निश्चित करते हैं।

आनुभाविक विज्ञान (Emprical Science)—वह विज्ञान, जिसमें सिद्धांतों के बदले अनुभवों एवं प्रेक्षणों को अध्ययन का आधार माना जाता है।

लाण्डेरकुण्डे (Landerkunde)—इस जर्मन शब्द का अर्थ है-प्राकृतिक प्रदेश।

क्रमबद्ध विधि (Systematic Method)—क्षेत्रों में तत्त्व-सम्मिश्रों (element compleases) का विश्लेषण करने के लिए प्रत्येक सम्मिश्र को उसके अलग-अलग तत्त्वों में बाँटकर 'प्रकरणबद्ध' (Topicwise) विधि से उन तत्त्वों का अध्ययन किया जाता है।

शुद्ध भूगोल (Reine Geography)—राजनीतिक के बजाए प्राकृतिक क्षेत्रों के आधार पर पृथ्वीतल का वर्णन करना।

5.7 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

5.7.1 लघु उत्तरीय प्रश्न [Short Answer Questions]

1. कार्ल रिटर का संक्षिप्त परिचय दें।
2. रिटर को 'आरामकुर्सी पर आसीन भूगोलवेत्ता' क्यों कहा जाता है?
3. अर्डकुण्डे की विषय-वस्तु क्या है?
4. रिटर के भौगोलिक कार्यों एवं रचनाओं के बारे में बताएँ।
5. रिटर के अनुसार भूगोल का क्षेत्र, उद्देश्य एवं विषय-सामग्री क्या है?
6. रिटर के अध्ययन एवं वर्णन की कौन-कौन सी विधियाँ हैं?

5.7.2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न [Long Answer Questions]

1. भूगोल के विकास में कार्ल रिटर के योगदान एवं महत्त्व का वर्णन करें।
2. रिटर एवं हम्बोल्ड्ट का काल भौगोलिक चिन्तन के विकास का चिरसम्मत या शास्त्रीय युग (Classical period) क्यों कहलाता है? स्पष्ट करें।
3. टिप्पणी लिखें :-

(i) रिटर भूगोल की एकता का पक्षपाती

(ii) रिटर का क्षेत्रीय संबंध एवं क्रमबद्ध अध्ययन पर चिंतन

(iii) रिटर एवं हम्बोल्ड्ट का भूगोल के स्वरूप पर पड़ा प्रभाव

5.8 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. भौगोलिक चिंतन - डा० मामोरिया एवं जैन
2. भौगोलिक चिंतन का विकास : एक ऐतिहासिक समीक्षा - डा० आर० टी० घोष
3. भौगोलिक विचारधाराएँ एवं विधितंत्र - एस० डी० कौशिक
4. भौगोलिक चिंतन - डा० सुदीप्तो अधिकारी

●●●

भूगोल में रेटजेल का योगदान
Contribution of Ratzel in Geography

पाठ-संरचना (Lesson-Structure)

6.0 उद्देश्य (Objective)
6.1 परिचय (Introduction)
6.2 रेटजेल की जीवनी (Life History of Ratzel)
6.3 रेटजेल की भूगोल में देन (Contribution of Ratzel in Geography]
6.3.1 रेटजेल की रचनाएँ (Literary Works of Ratzel)
6.3.2 रेटजेल की विचारधारा (Thoughts of Ratzel)
6.3.3 रेटजेल और मानव भूगोल (Ratzel and Anthropo
6.4 निष्कर्ष [Summing up]
6.5 व्यवहृत शब्दावली [Key words used]
6.6 अभ्यासार्थ प्रश्न [Questions for exercise]
6.6.1 लघु उत्तरीय प्रश्न [Short Answer Questions]
6.6.2 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न [Long Answer Questions]
6.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

6.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य विद्यार्थियों को फ्रेडरिक रेटजेल के द्वारा भूगोल में योगदान के विषय में जानकारी प्रदान करनी है। इस पाठ को पढ़ने के उपरांत विद्यार्थी जान पाएँगे कि–

1. फ्रेडरिक रेटजेल कौन हैं
2. उनकी जीवनी क्या है और उनकी शिक्षा कहाँ और किन विषयों में हुई
3. भूगोल में उनकी महत्त्वपूर्ण देन क्या है
4. मानव और राजनैतिक भूगोल में उनका क्या महत्त्व है
5. किन बिंदुओं पर उनकी आलोचना की जाती है

6.1 परिचय (Introduction)

फ्रेडरिक रेटजेल एक प्रसिद्ध जर्मन भूगोलवेत्ता और मानव विज्ञानी है जिन्होंने 'लेबेनस्रोम' (Lebensroum) की संकल्पना प्रतिपादित की। भूगोल के अध्ययन में मानव के स्थान को स्थायी प्रकार से सुरक्षित रखने और मानव भूगोल तथा उसकी शाखाओं के प्रारंभिक विकास में महान योगदान के कारण

उन्हें 'मानव भूगोल का जन्मदाता' भी कहते हैं। राजनैतिक भूगोल में भी उनके योगदान के कारण जर्मनी में उन्हें 'राजनैतिक भूगोल का पिता' भी माना जाता है। उनके महान ग्रंथ 'एन्थ्रोपोज्यॉग्राफी' (Anthropogeography) से मानव भूगोल का विकास हुआ, जिसमें भूतल के समस्त तत्त्वों और मनुष्य के संबंधों को क्रमिक पद्धति में रखा गया है। हम्बोल्ड्ट की तरह रेटजेल ने भी अपनी यात्राओं के माध्यम से यथार्थ (वास्तविक) बातों से सीधा संपर्क स्थापित करके भूतल के तत्वों और मानवीय संबंधों का अध्ययन और वर्णन किया और 'वातावरण निश्चयवाद' (Environmental Determinism) के सिद्धांत का भी प्रतिपादन किया।

6.2 रेटजेल की जीवनी (Life History of Rattzel)

फ्रेडरिक रेटजेल का जन्म 30 अगस्त 1844 ई० में पर्शिया (भूतपूर्व जर्मनी) के कार्लशू (Karlsuhe) नगर में एक साधारण परिवार में हुआ। उन्होंने हाईस्कूल तक की शिक्षा कार्लशू में प्राप्त करने क बाद 15 वर्ष की उम्र में एक औषधि विक्रेता के यहाँ औषधि शिक्षु (Druggist Apprentice) के रूप में 4 वर्षों तक काम किया। 1863 में स्विट्जरलैंड के ज्यूरिस झील पर स्थित रैपर्सविल (Rappersuil) में उन्होंने शास्त्रों की पढ़ाई की। बाद में उन्होंने हाइडेलवर्ग (Heidelberg), जेना (Jena), बर्लिन (Berlin) और म्यूनिख (Munich) विश्वविद्यालयों में प्राणि-विज्ञान (Zoology), और भू-विज्ञान (Geology) का गठन अध्ययन किया। सबसे पहले 1869 में उन्होंने डार्विन के विकासवादी ग्रंथ की समालोचना 'Sein and Urden der organischer welt' में प्रस्तुत की। उन्होंने भौतिक विज्ञानों के अलावा इतिहास, मानव-विज्ञान और राजनीतिशास्त्र में भी शिक्षा प्राप्त की। इन विषयों पर उन्होंने जीवन भर कई लेख एवं ग्रंथ भी लिखे, जो अलग-अलग स्थानों से जर्मनी की विख्यात पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। क्यूनिख में अध्ययन से पूर्व उन्होंने अपने देश की ओर से फ्रांस-पर्शिया युद्ध में सक्रिय रूप से भाग भी लिया। वहाँ वे महान मानवशास्त्री बेगनर (Mority Wagner) से मिले तथा उनके 'जीवों का आकलन' (Migration of Species) सिद्धांत से काफी प्रभावित हुए।

फ्रांस के मॉन्टपेलियर (Montpellier) में उन्होंने प्रसिद्ध प्राणि-वैज्ञानिक चार्ल्स मार्टिन्स (Charles Mortins) के साथ भी काम किया। फिर भूमध्य क्षेत्र में किए गए क्षेत्र कार्यों और अनुभवों पर आधारित कुछ लेख प्रकाशित करवाए, जिनका शीर्षक 'भूमध्यसागरीय तट से जीव वैज्ञानिक पत्र (Zoological letters from the shares of the Mediterranean) था। इन पत्रों के माध्यम से उन्हें Calogne Journal में travelling पत्रकार की नौकरी मिली और इन्हें आगे की मात्राओं के लिए एक साधन मिल गया। उनकी यूरोपीय देशों की यात्रा का वर्णन 'Travel of a Naturalist' (1872) नामक ग्रंथ में मिलता है।

उनकी सबसे लंबी और महत्वपूर्ण खोज यात्रा उत्तरी अमेरिका, क्यूबा और मेक्सिको (1877-75) की रही, जिसने उनके कैरियर को ही बदल दिया। अपनी इन यात्राओं में वे भौगोलिक अध्ययन व प्राकृतिक

दृश्यों के वर्णन लिखने के सिद्धहस्त हो गए, जिसने उन्हें एक प्राणिवेत्ता और भू-विज्ञानवेत्ता से एक सफल भूगोलवेत्ता बना दिया। यह प्रभाव उनके चिंतन पर हमेशा बना रहा। 1876 में कैलिफोर्निया में 'चीनियों के प्रवास' पर शोध प्रबंध लिखने से उन्हें शोध डिग्री मिली।

1878 से 1880 के मध्य संयुक्त राज्य अमेरिका पर दो खण्डों में वहाँ का भौतिक एवं सांस्कृतिक भूगोल लिखा, जिसने 'सांस्कृतिक भूगोल' के क्षेत्र को स्थापित करने में मदद की। 1875 में जर्मनी लौटने पर Technical High School, क्यूनिख में भूगोल के व्याख्याता हुए, 1876 में सहायक प्रोफेसर तथा 1880 में प्रोफेसर। उपर्युक्त सभी पुस्तकें उन्होंने क्यूनिख में ही लिखी। 1886 में वे लिपजिग (Leipzing) विश्वविद्यालय में प्राध्यापक एवं बाद में विभागाध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए, जहाँ वे मृत्युपर्यन्त (9 अगस्त 1904) कार्य करते रहे। यहाँ ज्योग्राफिक्स सोसायटी को अपने विशिष्ट कार्यों से विश्वविख्यात किया। उनके व्याख्यान को सुनने काफी लोग आते थे, जिनमें अमेरिकन भूगोलवेत्ता एलेन चर्चिल सेम्पल भी एक थी, जो उनकी शिष्या व निश्चयवादी के रूप में प्रसिद्ध हुई। उस समय के प्रसिद्ध विद्वानों फिशर (Fisher), एस्कर्ट (Eckert) व हेटनर (Hettnex) ने भी उनके साथ कार्य किया है।

6.3 रेटजेल की भूगोल में देन (Contribution of Ratzel in Geography)

6.3.1 रेटजेल की रचनाएँ [Literary Works of Ratzel] :

प्रारंभ से ही रेटजेल को लेखन एवं समालोचनापूर्ण निर्णय प्रस्तुत करने में रूचि रही। उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ निम्नलिखित हैं :-

1) 1869 – डार्विन के विकासवादी सिद्धांत की व्यवस्थित समालोचना।

2) 1872 – 'एक प्राणिवेत्ता की मात्राएँ [Travels of a Naturalist]
मध्य यूरोप की यात्रा के समय लिखे गए लेखों का समूह।

3) 1870 के युद्ध के बाद –'भूमध्यसागरीय तट से जीव वैज्ञानिक पत्र' [Zoological letters from the shares of the Mediterranean]

4) 1876 – 'चीनी प्रवास' [Chinese Emigration] पर शोध प्रबंध (Thesis)।

5) 1878-80 – 'उत्तरी अमेरिका का भौतिक एवं सांस्कृतिक भूगोल' [दो खण्डों में]।

6) (a) 1882 – An Introduction to the Application of Geography to History. [Anthropogeographie ग्रन्थ का प्रथम खंड]।

(b) 1891 – 'The Geographical Distribution of Manking'. [Anthropogeograhic का दूसरा खंड]।

7) 1885, 1886, 1888 – 'Volkerkunde' ग्रंथ का तीन खंड, जिसका अंग्रेजी में 'The History of Mankind' (1896-98) नाम से अनुवाद हुआ।

8) 1893 – 'उत्तरी अमेरिका का राजनैतिक भूगोल।

9) 1901-02 – 'Vergleichende Erdkund' [Earth and life : A Comparative Geographic) – विशाल ग्रंथ, जिसकी जर्मन विद्वानों में खूब प्रशंसा की।

10) 1897 में प्रथम खंड - सबसे अंतिम महत्त्वपूर्ण ग्रंथ ''राजनैतिक भूगोल' [Political Geography or the Geography of Trades and Wars.]

11) मृत्यु के पश्चात् 1906 में प्रकाशित - भूगोल से संबंधित लिखे गए अधिकांश उपलब्ध लेखों के संकलन पर आधारित दो खंडों वाला ग्रंथ - 'Kleine Schrifter'.

12) 1898 - 'जर्मनी : ड्यूशलैण्ड' [स्कूली छात्रों के लिए]

1898 - 1932 तक छह संशोधित संस्करण और 1943 में पूर्ण संशोधित संस्करण हन्स बोबेक के निर्देशन में।

13) 'Library of Geographical Manuals' - इसमें विभिन्न विशेषज्ञों की रचनाएँ प्रकाशित हुईं।

रेटजेल किरचोफ के साथ कई वर्षों तक 'जर्मनी की केन्द्रीय भूगोल कमेटी' के प्रभावशाली सदस्य बने रहे। उन्होंने इसका उपयोग भूगोल में उच्च स्तर पर अध्ययन एवं शोध पर प्रोत्साहन के लिए किया। उनके व्याख्यान बाद के छात्रों के लिए मार्गदर्शक बने रहे।

6.3.2 रेटजेल की विचारधारा [Thoughts of Ratzel]

बहुमुखी प्रतिभाशाली रेटजेल ने वातावरण तथा मानवीय तथ्यों एवं उनके पारस्परिक संबंधों (inter-relations) का विश्लेषण कर उसमें वातावरण के प्रभावों को महत्त्वपूर्ण बताया, जिसके कारण उन्हें

FIG. BY F. RATZEL

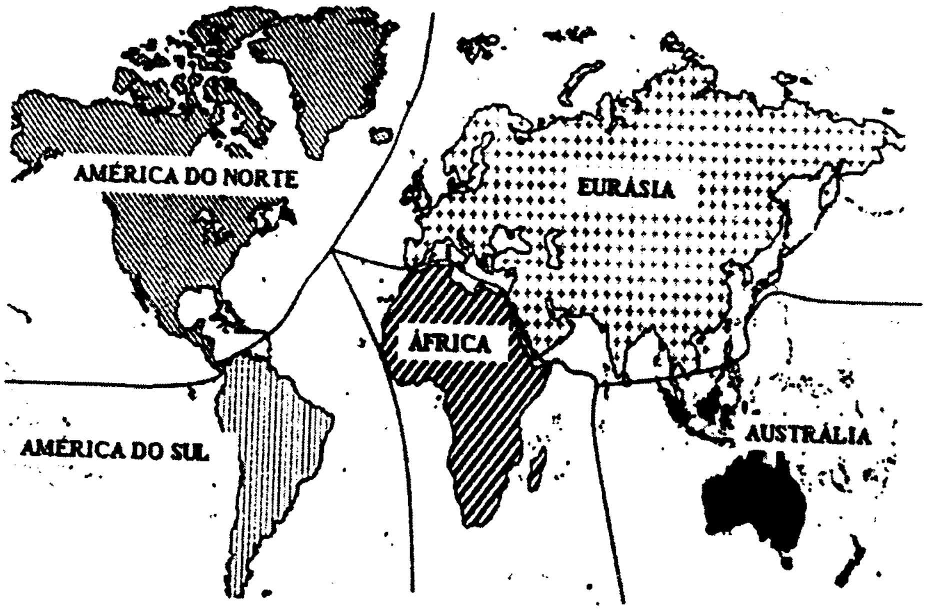

वातावरण-निश्चयवाद (Environmental Determinism) के सिद्धांत का प्रतिपादक माना गया। उन्होंने Anthropogeographic के प्रथम खंड में मानवीय समाजों के इतिहास पर भौगोलिक वातावरण के प्रभावों का विवेचन किया। उन्होंने जीव-विज्ञान पर भी लिखा तथा यूरोप व उत्तरी अमेरिका के भ्रमण ने उन्हें हम्बोल्ड्ट की भाँति एक भूगोलवेत्ता बना दिया। मानव भूगोल के लिए पहली बार Anthropo-Geography शब्द का प्रयोग किया। उनके अनुसार मानव भूगोल को भौतिक भूगोल की पृष्ठभूमि में ही सही-सही

समझा जा सकता है। मानव भूगोल भू-मंडल पर स्थल एवं भौतिक परिवेश से नियंत्रित मानवता के विस्तार एवं विवरण को समझाता है। सभी यूरोपीय भूगोलवेत्ताओं ने उनके विचारों की सराहना की। रेब्जेल को जर्मनी ने 'मानव भूगोल का पिता' होने का सौभाग्य प्राप्त है।

6.3.3 रेटजेल और मानव भूगोल [Ratzel and Anthropogeography]

रिटर के विचारों से प्रभावित रेटजेल ने Anthropogeography के प्रथम खंड में स्पष्ट किया कि पृथ्वी पर मानव वितरण किस प्रकार बहुत कुछ प्राकृतिक शक्तियों द्वारा नियंत्रित होता है। इसमें उन्होंने रिटर के अर्डकुण्डे में दिए गए विचारों का विकास करते हुए भूतल पर स्थित दृश्यभूमियों के संबंधों को स्पष्ट किया। दूसरे खंड (1891) में तात्कालिक जनसंख्या का वितरण दिखलाया गया है। उन्होंने पृथ्वी को पूर्ण इकाई (integral whole) माना। परन्तु उनका चिंतन इस ग्रंथ में निम्न दो बातों के आधार पर भिन्न है-

(i) रेटजेल ने मानव भूगोल का वर्णन क्रमबद्ध विधि से किया, जबकि रिटर ने प्रादेशिक विधि अपनायी थी।

(ii) रेटजेल ने डार्विन के विकासवादी सिद्धांत के दृष्टिकोण को प्रधानता दी, जबकि रिटर ने ईश्वरीय उद्देश्यवाद को अपनाया था।

(iii) रेटजेल के अनुसार प्रकृति में विकास का अंतिम उत्पाद मानव है, पर रिटर के अनुसार मानव और प्रकृति में पारस्परिक संबंध ईश्वरीय सृजन उद्देश्य (creative purpose of god) के अनुसार है।

रेटजेल के ग्रंथों में भूगोल को एक अधिक संतुलित दृष्टिकोण दिया और मानव भूगोल के अध्ययन में तेजी आई। प्रथम ग्रंथ में उन्होंने मानव और प्रकृति के बीच गहन अंतर्सम्बन्ध स्थापित करते हुए प्राय: कठोर निश्चयवाद का अनुसरण किया। मानव और उसके विकास के लिए उन्होंने निम्न तीन कारणों को उत्तरदायी माना। ये हैं :-

(i) Lage (situation) स्थिति – यह स्थिति अन्य मानव समूहों के संदर्भ में है।

(ii) Raum (Space) – स्थान या क्षेत्र की सहसम्बद्धता, क्षेत्र की केन्द्रीयता एवं उनकी सीमावर्ती स्थिति इसके अंग है। ऐसा तंत्र जनसंख्या की अधिकता के साथ-साथ प्राकृतिक अथवा मानवीय बाधाएँ स्वीकार नहीं करता है।

(iii) Rahwen (limits) सीमाएँ – मानव समुदाय प्राकृतिक ढाँचें अथवा निर्धारित सीमा में विकसित होते हैं।

संक्षेप में, रेटजेल के इस ग्रंथ में निम्न तीन समस्याओं की ओर विशेष ध्यान दिया गया है :

(i) भूतल पर मानव समूहों का वितरण।

(ii) उपरोक्त वितरण किस प्रकार भौतिक परिवेश द्वारा प्रभावित है और उस पर निर्भर है।

(iii) मानव एवं उसके समाज पर भौतिक परिवेश का स्पष्ट प्रभाव; जैसे-जलवायु एवं धरातल का प्रभाव।

उन्होंने इस प्रकार Anthropogeographic में सामान्यीकरण की प्रक्रिया को अपनाते हुए, सामने आई समस्याओं का निराकरण करते हुए उससे संबंधित विषय को समझाने में लग गए। रेटजेल, रिचथोफेन और हेटनर तीनों ने क्षेत्रों के वृहद् अध्ययन व सूक्ष्म अध्ययन (regions for macro study and areas for